शोध मंथन Vol. XIV No.I Jan.-Mar.2023 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Impact Factor 8.870 (SJIF)

भारतीय लघु चित्रकला में चौपड़ खेल चित्रों का विशेष अध्ययन

प्राप्तिः 05.03.2023
स्वीकृतः 16.03.2023

19

तूलिका तिवारी
शोधार्थी, कला विभाग
दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट,
दयालबाग, आगरा
ईमेलः *tiwaritulika500@gmail.com*

डॉ० नमिता त्यागी
कला विभाग
दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट,
दयालबाग, आगरा
ईमेलः *natyagi09@gmail.com*

सारांश

मानव संस्कृति के साथ–साथ कला का विकास यथार्थ से काल्पनिक दिशा की ओर निरन्तर होता रहा है। मानव के मनोगत भावों को व्यक्त करने हेतु शब्द, संकेत, मुद्रा, चिन्ह आदि का प्रयोग ही कला का प्रारम्भ रहा। आदि काल से ही मानव ने अपने भावों को व्यक्त करने हेतु रेखाओं व रंगों का सहारा लिया, जिसके रूप निरन्तर मानसिक विकास के साथ विकसित व परिवर्तित होते रहे हैं, इसके फलस्वरूप वह साहित्य, संगीत, मनोरंजन आदि की सृष्टि कर सका। आज ये आश्चर्यजनक कलाओं से परिपूर्ण दृष्टिगोचर होता है तथा दृश्यकला श्रेणी की विभाजित विधाओं में चित्रकला, मूर्तिकला और स्थापत्यकला बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसी प्रकार से कला का सम्बन्ध, धर्म व समाज से अटूट रहा। जिसके माध्यम से मनुष्य ने खेलों को भी एक सुदृढ़ जीवन प्रदान किया। खेलों के माध्यम से व्यक्ति अपने शारीरिक व मानसिक विकास को अभिव्यक्त करता है। खेल उसकी दिनचर्या में समाहित उसका एक अभिन्न अंग बन जाता है। भारतीय कलाएँ भी इस गतिविधि से प्रभावित रहीं, तथा अनेक भारतीय कला में ऐसे उदाहरण हैं, जिनमें खेलों की अभिव्यक्ति की गई। खेल विषय– वस्तु पर आधारित चित्र लघु चित्रण की विभिन्न शैलियों में दृश्टव्य होते हैं जिनमें तीरन्दाजी, चौगन, नट–करतब, घुड़सवारी, चौपड़ आदि खेलों पर चित्र बने हैं, जिनमें चौपड़ का परिचय व उनसे सम्बन्धित लघु चित्रों के कलात्मक अध्ययन को मैं इस शोध पत्र के माध्यम से प्रस्तुत करूँगी।

मुख्य बिन्दु

चौपड़, खेल, लघु–चित्रण, चित्रकला।

जीवन ऊर्जा का सार है, जब अंतचेतना जागृत होती है, तो ऊर्जा जीवन को कला के रूप में उभारती है, कला मानव की अभिव्यक्ति है। भारतीय कला का इतिहास अत्यन्त प्राचीन है, जिसके प्रारम्भिक उदाहरण प्रागैतिहासिक शैल चित्रों में प्राप्त हैं। भारतीय कला का विकास विभिन्न विधाओं

के माध्यम से हुआ, जिसमें स्थापत्य कला, मूर्तिकला व चित्रकला आते हैं। सर्वप्रथम किसी भी कला की बात करें, तो वह समाज, धर्म व शारीरिक गतिविधियों से जुड़ी हुई है, जिनमें खेलों को भी सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। खेल, कई नियमों एवं सिद्धान्तों द्वारा संचालित होने वाली एक प्रतियोगी की शारीरिक क्षमता खेल के परिणाम का एकमात्र अथवा प्राथमिक निर्धारक होती है। खेलकूद सार्वजनिक रूप से शारीरिक शक्ति तथा मानसिक विकास के कुशल माध्यम माने जाते हैं।

हरलोक के अनुसार, "खेल का सम्बन्ध उस क्रिया से है जिसमें प्रसन्नता मिलती है जब वह उस कार्य को करने के लिए स्वतन्त्र होता है जो वह करना चाहता है।"

खेल सम्बन्धी गतिविधियाँ समाज के लोगों के मनोबल को दर्शाती हैं, जो मनुष्य जीवन में प्रेरणा, उत्साह एवं आपसी सम्बन्धों का संचार करती है। समपूर्ण विश्व में शारीरिक शक्ति व मानसिक विकास के लिए खेलों को सर्वश्रेष्ठ माध्यम के रूप में स्वीकार किया गया है। भारतीयों को खेलो के प्रति स्नेह के लिए जाना जाता है। इसके महत्व को समझाते हुए कलाकार भी इनसे प्रभावित रहे, तथा चित्रकला, मूर्तिकला के रूपों में प्रकट करते आये हैं जिसके साक्ष्य हमें प्राचीन काल से वर्तमान काल तक प्राप्त होते हैं। जिनके माध्यम से तत्कालीन समाज का खेलों के प्रति दृष्टिकोण व खेल भावना का ज्ञान होता है।

चित्र सं.– 1 Shiv and Parvati play Dice. Cave 21, Ellora
Source- https://commons.m.wikimedia.org/wiki/File:Ellora

भारतीय खेलों की कहानी शायद उतनी पुरानी है जितनी की भारतीय सभ्यता की। खेल इतने महत्वपूर्ण माने जाते हैं कि आकाश की विभूतियाँ भी उनका आनंद लेती हैं। यहाँ तक की ब्रह्मांड के माता, शिव और उमा को एलोरा में रामेश्वर गुफा में वाकाटक युग की एक शानदार मूर्ति में बहुत ही गंभीर भावभंगिमा से चौपड़ खेलते हुए दर्शाया गया है, अपनी सफलता से आश्चर्य व आनंदमयी देवी उमा अपना हाथ उठाकर लगभग शिव को ताना मारती हैं, जो हारने के उपरांत थोड़े शर्मिन्दा प्रतीत होते हैं। पार्वती के मुस्कुराते हुए चेहरे की खुशी से पता चलता है, कि भारतीय दिमाग में खेलों के प्रति असाधारण रूचि है और वे सफलता हासिल करने के लिए परिश्रम करते हैं। सफलता का चित्रण जो यहाँ दर्शाया गया है उसके समक्ष बाकी सफलताएँ शून्य प्रतीत होती हैं। यह मूर्तिशिल्प, तत्कालीन खेल व मनोरंजन के प्रति प्रेम को प्रदर्शित करता है। इसी प्रकार का चित्र हमें लघु चित्रकला की पहाड़ी शैली में भी देखने को मिलता है।

10वीं शताब्दी, कलचुरी वंश से प्राप्त यह खेल का उत्कृष्ट उदाहरण जबलपुर संग्रहालय में स्थित है। इसमें शिव पुराण और स्कंद पुराण के अनुसार, दिव्य युगल पासे का खेल 'चौपड़' खेलते हुए दर्शाए गए हैं। इस मूर्तिशिल्प में भगवान शिव अपने त्रिशूल, डमरू यहाँ तक की नंदी, बैल को

भी चलाते हैं, इसके मध्य नीचे की पंक्ति में गणेश और स्कंद जीत और हार के इस दिव्य युगल पासे का खेल चौपड़ खेलते हुए दर्शाए गए हैं। इस मूर्तिशिल्प में भगवान शिव अपने त्रिशूल, डमरू यहाँ तक कि नंदी बैल को भी चलाते हैं, इसके मध्य नीचे की पंक्ति में गणेश और स्कंद, जीत और हार के इस दिव्य खेल को देखते हैं। शिव के 'गण' बैल के साथ खेलने की कोशिश करते हैं। शिल्पकारों द्वारा ये बहुत अद्भुत तरह से रचित की गई मूर्ति है, इसे हाई रिलीफ भित्ति चित्रण कह सकते हैं, क्योंकि ये पूर्ण रूप से त्रिआयामी मूर्ति नहीं है, ये दीवार या किसी शिला पर उकेरकर बनाई गई है, जिसमें सेन्ड बलुआ पत्थर का प्रयोग किया गया है, जिसके लिए छैनी, हथोड़ी एवं कम्पास औजार में प्रयोग किए गए हैं आकृतियाँ पूर्ण रूप से लयात्मक हैं। इस मूर्तिशिल्प में संदेश गम्भीर है, जिसमें पासा समय व्यक्त करता है, टुकड़े इंसान हैं समय बदलते ही हमारा भाग्य बदल जाता है, हमारी बुद्धि के बावजूद, अततः प्रकृति (पार्वती) की जीत होती है। इसी तरह के उदाहरण प्राचीन काल में देवी–देवताओं, राजा–रानियों व आम व्यक्तियों द्वारा मूर्तिकला व चित्रों के रूप में प्राप्त होते हैं। जिसमें तीरन्दाजी, चौगन, चौपड़, मल्ल–युद्ध, घुड़सवारी को प्रदर्शित किया गया है, जिनमे चौपड खेल का स्वयं में अनूँठा स्थान है।

चित्र सं.– 2 Art Treasures of India: Lord Shiva and Goddess Parvati Playing Chaupar

Source- https://images.app.goo.gl/ghTZq4B73P7JL39M9

चौपड़ खेल का परिचय

चौपड़ प्राचीन काल से भारत का एक लोकप्रिय खेल रहा है। यह खेल महाभारत और मुगल काल में प्रसिद्ध रहा। महाभारत का प्रसिद्ध युद्ध इस खेल से ही सम्बन्धित रहा, जिसमे युद्ध दूसरों के बीच, मुख्य रूप से चौपड़ के कारण हुआ, जिसमें युधिष्ठिर ने अपना राज्य खो दिया। चौपड़ बोर्ड पारंपरिक रूप से क्रॉस के आकार का एक कपड़ा होता है। क्रॉस की प्रत्येक भुजा को तीन स्तम्भों में और प्रत्येक स्तंभ को आठ वर्गों में विभाजित किया जाता है। गोटियां आमतौर पर लकड़ी के बने होते हैं। प्रत्येक खिलाड़ी के पास चार गोटियां होती हैं। अधिकतम चार खिलाड़ी इस खेल को खेलते हैं, तथा प्रत्येक क्रॉस की एक भुजा के सामने एक व्यक्ति बैठता है। क्रॉस के केन्द्र को 'घर' कहा जाता है। प्रत्येक खिलाड़ी की गोटी के लिए क्रॉस की प्रत्येक भुजा पर केन्द्र स्तम्भ को होम कॉलम कहते हैं। खिलाड़ी के लिए शुरूआती बिंदु उसके होम कॉलम के बांई ओर स्तम्भ पर फूल आकृति होती है। प्रत्येक खिलाड़ी को अपनी चार गोटियों को शुरूआती बिंदु से खेल में प्रवेश कराना होता है। गोटियां बाहरी

परिधि स्तंभों के चारों ओर एक दक्षिणावर्त में घूमती हैं, इससे पहले कि कोई खिलाड़ी अपनी किसी भी गोटी को 'घर' ला सके, उसे दूसरे खिलाड़ी की कम से कम एक गोटी को हटाना होता है, ऐसा करना 'तोड़' कहा जाता है। खिलाड़ी की केवल अपनी गोटियां ही उसके होम स्तम्भ में प्रवेश कर सकती हैं। शुरू करने के लिए, प्रत्येक खिलाड़ी को कौड़ियां उछालनी होती हैं, जिसका उच्चतम होता है वह खिलाड़ी पहले शुरू करता है। एक बार जब गोटी फूल की आकृति को पार कर लेती है, तो यह इंग्ति करता है कि वह गोटी अब सुरक्षित है। इसी प्रकार से चौपड़ के खेल को खेला जाता है, जिनमें लघु चित्रकला में बने अनेक चित्र हमें उनकी शैलियों व उपशैलियों में दृष्टिगत होते हैं।

भारतीय चित्रकला के इतिहास में लघु चित्रों का उद्भव 8वीं शताब्दी पाल शैली में माना जाता है, जिसके अन्तर्गत भारतीय धर्म तथा संस्कृति पर आधारित चित्रण का अर्थ उन चित्रों से है जो आकार में अपेक्षाकृत छोटे होते थे। इसी कारण उन्हें 'लघु चित्रों' के नाम से सम्बोधित किया जाने लगा। भारतवर्ष में पट् चित्रों के रूप में भी लघु चित्रण परम्परा का विकास हुआ, तब भारतीय लघु चित्रण परम्परा को एक नई दिशा प्राप्त हुई और आगे आने वाले समय में लघु चित्रण का एक नवीन कलात्मक व वैभवपूर्ण स्वरूप उभरकर सभी के समक्ष प्रस्तुत हुआ। जिनमें मुगल, राजस्थानी व पहाड़ी शैली दृष्टव्य होती है। लघु चित्र अपने कलात्मक सौन्दर्य के लिए प्रतिष्ठित माने जाते हैं तथा चित्रकला भारत में एक सुदृढ़ कला मानी गई है, चौपड़ खेल से सम्बन्धित विभिन्न लघु चित्रों का कलात्मक सौन्दर्य स्वयं में उत्तम व अनूँठा है। जिनका कलात्मक विवरण इस प्रकार है–

चित्र सं.– 3 Krishna watching ladies playing chaupar Illistraration to rasikapriya Bundi (Rajasthan) Circa. 1700 A.D.

Source- National Museum, New Delhi

प्रस्तुत चित्र, बूँदी शैली में 1700 ई0 पू0 में चित्रित किया गया है। यह राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में संग्रहीत है। इस चित्र में दो स्त्रियों को, एक कालीन पर बैठे चौपड़ खेलते हुए रंगों में जैसे लाल, नीला तथा हरे रंग का प्रयोग करते हुए विभिन्न तानों की बहुलता प्रदर्शित की गई है। चित्र द्वि–आयामी रूप में सरल रेखाओं की सहायता द्वारा बनाया गया है। मुख्यः रूप में सफेद रंग का उपयोग अधिक हुआ है, इस चित्र में उपस्थित तीन स्त्रियों का ध्यान चौपड़ खेलने पर है, परन्तु एक स्त्री श्री कृष्ण की ओर, तथा श्री कृष्ण की उस स्त्री की ओर देख रहे हैं। श्री कृष्ण हाथ में एक पुष्प लिए हुए हैं, भावों का सुन्दर प्रदर्शन इस चित्र में चित्रित किया गया है।

चित्र सं.– 4 जो कि 1700– 1725ई० में चित्रित, पहाड़ी शैली की उपशैली, बसोहली शैली में बना यह चित्र, अपारदर्शी जल रंग कागज पर सोने के साथ चित्रित किया गया है, इसकी माप

6.5X9.3 इंच है। जो कि इस समय 1960 दशक में परिवार द्वारा अधिग्रहित आर हेल, कैल्फिोर्निया के संग्रहालय में संग्रहित है। इस चित्र में एक राजा, अपने तीन दरबारियों के साथ चौपड़ खेलते हुए दर्शाये गए हैं चौपड़ में भाग लेने वाले सभी दरबारियों को सफेद मलमल का जामा पहने और पगड़ी पहने बनाया गया है, कटारों या पंच–खंजरों को छोड़कर उनके कमरबंद में कोई विस्तृत अलंकरण नहीं है। हालांकि राजा को उच्च व प्रमुख रूप से दिखाने के लिए राजा विस्तृत कढ़ाई और एक रंगीन, पंखों वाली पगड़ी के साथ जामा पहने चित्रित किए गए हैं। एक तीव्रता उस दृश्य में व्याप्त है, जो तेज चटक पीले रंग की पृष्ठभूमि में उभर कर आ रही है। ऐसा प्रतीत होता है मानो खेल की तुलना में मनोवैज्ञानिक रूप से यहाँ अधिक दांव लगा हुआ है, क्योंकि राजा और उनके दरबारी कुछ आक्रामक हाव–भाव प्रदर्शित करते हैं। चित्र को वास्तविक बनाने का प्रयास किया गया है। चौपड़ को सरल रेखाओं द्वारा तथा गोटियों को विभिन्न रंगों में दिखाया गया है। धरातल पर बिछे कालीन पर छोटी–छोटी बूटियाँ अंकित की गई हैं। चित्र में संतुलन देखने को मिलता है।

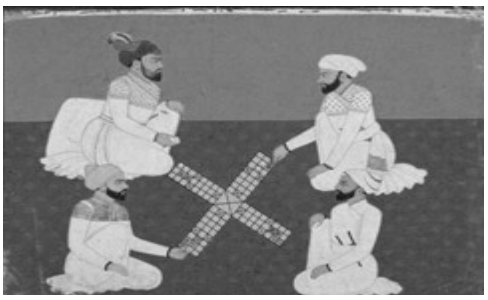

चित्र सं.–4 A Raja and His Courtries Playing Chaupar

Source- https://art.kunstmatrix.com/en/artwork/a-raja-and-his-courtries- playing-chaupar/guler-or-basholi

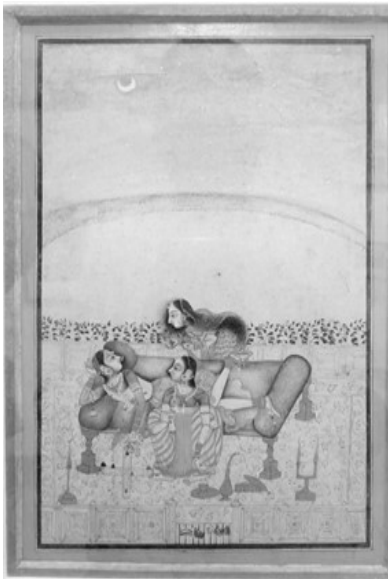

यह चित्र मुगल शैली में 1780 ई० में चित्रित किया गया है। मुगल कालीन चित्रित इस चित्र में स्त्रियों का एवं वेशभूषा का अंकन प्रभावपूर्ण किया गया है, वेशभूषा की विशेषता में यह बीकानेर शैली का उदाहरण प्रस्तुत करती है। चित्र में हरे, पीले व सफेद रंग का अधिक प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत चित्र में दो स्त्रियों को एक कालीन पर चौपड़ खेलते हुए दर्शाया गया है बैठी हुई एक स्त्री के पृष्ठ में, एक खड़ी हुई चँवर हिलाती हुई चित्रित की गई है। बांयी तरफ बैठी हुई दो स्त्रियाँ चित्रित हैं, जो क्रमशः वीणा वादन करते हुए एवं मंजीरे बजा रही हैं, ऐसा लगता है मानो चित्रकार ने कागज पर सोने का प्रयोग कर इसा चित्र को सजीव बना दिया हो। एक मंडप के सामने एक छत पर बैठी व खड़ी नायिकाओं को यथार्थ रूप से प्रस्तुत करने की

चित्र सं.– 5 Ladies Pkaying Possibly Bikaner, Mughal India, Circa 1780

Source- https://images.app.goo.gl/BbWD8dEftW3f5Bu3A

चेष्टा की है। रंग संयोजन इतना कुशल है, मानो चित्र सजीव हो उठा हो। पीले एवं नारंगी रंग की ताने चित्र में स्फूर्ति और जीवन्ता प्रदान कर रही है। पृष्ठभूमि के हरे रंग को स्त्रियों के वस्त्रों के साथ संतुलित किया गया तथा पीछे की ओर विस्तृत श्वेत भवन सम्पूर्ण चित्र को शांत वातावरण प्रदान कर रहा है।

चित्र सं.– 6 Devidas of Nurpur| Shiva and Parvati Playing Chaupar: Folio
Source- https://pin.it/3kavuB7

प्रस्तुत चित्र 1694–95 ई० का है, यह चित्र भानुदत्त की पंद्रहवी शताब्दी की संस्कृत प्रेम कविता रसमंजरी (सुख के अनुभव का सार) को दर्शाने वाली श्रृंखला से संबंधित है, जो नायक (नायक–प्रेमी) और नायिका की भावनाओं की अभिव्यक्ति और वर्गीकरण के लिए समर्पित है। इसकी उत्पत्ति नाट्य कलाओं पर प्रथम ग्रंथ भरत के नाट्यशास्त्र में हुई है बोल्ड रंगों और स्थानिक अस्पष्टताओं से जीवंत इस अत्यधिक आवेशित दृश्य में, पार्वती अपने पति शिव से विनती कर रही हैं, जिसने चौपड़ के खेल में उन्हें एक हार से धोखा दिया गया है। रंग और हावभाव का प्रतीकात्मक उपयोग इस अवधि के बसोहली शैली की एक विशिष्ट है चित्र में श्रृंगार रस है। इसका मुख्य केन्द्र बाघ की चमड़ी का आसन है। जिसके चों पंजों पर नाखून चित्रित हैं। इसकी पृष्ठभूमिपर चटक पीले रंग की तथा पतली रेखाओं का सुन्दर समन्वय देखने को मिलता है।

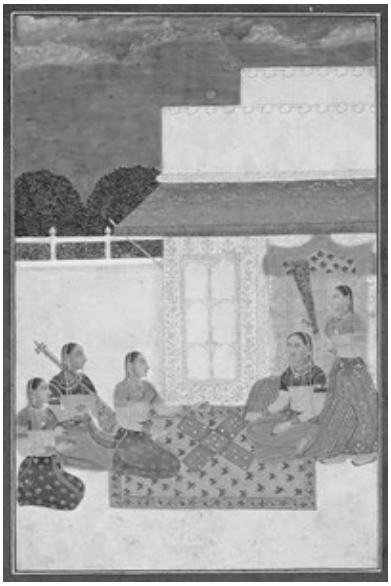

प्रस्तुत चित्र 1725–30 ई० में बूँदी शैली में चित्रित राष्ट्रीय संग्रहालय, नई दिल्ली में संग्रहीत है। चित्र में ऊपर की ओर उपस्थित चाँद, रात्रि के समय का संकेत देता है। चित्र में हल्के रंगों का प्रयोग किया है। तथा कुछ वस्तुओं में सिर्फ रेखाओं का प्रयोग किया गया है, जिसमें रंगों का प्रयोग नहीं है। तखत पर एक स्त्री तनाव रहित स्थिति में आनन्दपूर्वक आराम की मुद्रा में एक हाथ में प्याला व दूसरे में जार लिए उस स्त्री की तरफ देख रही है। नीचे बैठी हुई मुद्रा में

चित्र सं.– 7 Ladies playing chaupar, Bundi, Rajasthan, Circa A.D. 1725- 30, Neem Qalam Style, Paper, 25×18c.m.
Source- National Museum, New Delhi

चौपड़ की गोटी को फेंकते हुए दर्शाइ गई हैं। चित्र में मनोरंजन का वातावरण दृष्टव्य होता है। पृष्ठभूमि को खाली छोड़ा गया है। चित्र में रंगों की कमी असंतुलता का भाव देती है।

संदर्भ

1. अग्रवाल, श्यामबिहारी. (1999). भारतीय चित्रकला का इतिहास. रूपशिल्प प्रकाशनः इलाहाबाद।
2. वैद्य, किशोरी लाल. (1959). पहाड़ी चित्रकला।
3. विजयवर्गीय, रामगोपाल. (1953). राजस्थानी चित्रकला. विजयवर्गीय एलबम।
4. वर्मा, महेन्द्र. (2006). भारतीय चित्रकला की परम्परा. भारतीय कला प्रकाशनः 2421–ए, नारंग कॉलोनी, त्रिनगर।
5. बुद्ध, अमित अर्जुन. (2013). शारीरिक शिक्षा इन्साइक्लोपीडिया. लक्ष्य पब्लिकेशनः नई दिल्ली।

Bibliography

6. Agarwal, V.S. (1961). Indian Miniature, an album. Archaeology Government of India: New Delhi.
7. Agarwal, Rashmi Kala. (2006). Early Indian Miniature Painting. Sandeep Prakashan: Delhi.
8. Roy, Ohriand., Chander, Vishwa. (1998). Painter of the Pahari Schools. Marg Publications. vol50, No. 1 September.
9. Randhawa, M.S. (1981). Indian Miniature Painting. Publication: New Delhi.
10. Daljeet, Mathur V.K. Shah Rajeshwari- Fragrance in colours. Indian Miniature Paintings from the collection of the National Museum: New Delhi.
11. Khandalvala, Karl. (1959). Pahari Miniature. Bombay.

Internet Websites

12. www.rajput.miniaturepainting.com.
13. www.rajasthanstudies.com.
14. https://bookgoogle.com.
15. https://nationalmuseumindia.com.
16. https://www.bhu.ac.in.